अध्याय 4: नागार्जुन — यह दंतुरित मुसकान / फसल

विषय-सूची 5 प्रश्नावली · 13 प्रश्न

प्रश्नावली 4.1	यह दंतुरित मुसकान — पाठ से	4 प्रश्न
प्रश्नावली 4.2	यह दंतुरित मुसकान — रचना और अभिव्यक्ति	3 प्रश्न
प्रश्नावली 4.3	फसल — पाठ से	4 प्रश्न
प्रश्नावली 4.4	फसल — रचना और अभिव्यक्ति	1 प्रश्न
प्रश्नावली 4.5	शब्द-संपदा	1 प्रश्न

प्रश्नावली 4.1 — यह दंतुरित मुसकान — पाठ से

प्रश्न 1

बच्चे की दंतुरित मुसकान का कवि के मन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

हल

बच्चे की दंतुरित मुसकान कवि के मन पर अत्यंत गहरा और जादुई प्रभाव डालती है।
कवि कहता है कि यह मुसकान मृतक में भी जान डाल सकती है — अर्थात् जो व्यक्ति जीवन से निराश हो या पत्थर की तरह कठोर हो, वह भी इस मुसकान को देखकर पिघल जाएगा।
'पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण' — कवि यह बताता है कि कठोर पत्थर भी इस बच्चे का स्पर्श पाकर जल में बदल जाता है।
बच्चे की मुसकान देखकर कवि भाव-विभोर हो जाता है; कठोर हृदय में भी कोमलता और स्नेह जाग उठता है।
कवि चिर प्रवासी है — लंबे समय बाद मिले इस शिशु को देखकर वह अभिभूत हो जाता है और अपनी दंतुरित मुसकान को 'छविमान' (परम सुंदर) कहता है।

उत्तर: बच्चे की दंतुरित मुसकान कवि के कठोर मन को पिघलाकर कोमल बना देती है और उसे मृतक में भी जान डालने वाली शक्ति से संपन्न बताती है।

प्रश्न 2

बच्चे की मुसकान और एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में क्या अंतर है?

हल

बच्चे की मुसकान निश्छल, निर्मल और स्वाभाविक होती है — उसमें कोई स्वार्थ, दिखावा या कृत्रिमता नहीं होती।
बड़े व्यक्ति की मुसकान में प्रायः कोई-न-कोई भाव — जैसे सामाजिकता, औपचारिकता, या छुपा हुआ स्वार्थ — मिला रहता है।
बच्चे की दंतुरित मुसकान इतनी मोहक होती है कि वह पत्थर-दिल को भी पिघला देती है; बड़े की मुसकान में यह दुर्लभ सामर्थ्य नहीं होती।
बच्चा बिना किसी प्रयास और बिना किसी कारण के मुस्कुराता है, जो उसकी मुसकान को जीवन-ऊर्जा से भरपूर

बनाता है।
बड़े की मुसकान में थकान, अनुभव और सामाजिक बंधन का बोझ होता है, जबकि बच्चे की मुसकान में जीवन का उल्लास और ताजगी होती है।

उत्तर: बच्चे की मुसकान निश्छल और स्वाभाविक होती है जो कठोर हृदय को भी पिघला देती है, जबकि बड़े की मुसकान में औपचारिकता और अनुभव का बोझ होता है।

प्रश्न 3

कवि ने बच्चे की मुसकान के सौंदर्य को किन-किन बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया है?

हल

कवि ने बच्चे की मुसकान के सौंदर्य को निम्नलिखित बिंबों (images) के माध्यम से व्यक्त किया है:
1. जलजात (कमल का फूल): 'छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात' — बच्चे के गाल धूल-मिट्टी से सने हैं फिर भी उनमें कमल जैसी सुंदरता खिल रही है।
2. पिघलता पाषाण: 'पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण' — बच्चे के स्पर्श से कठोर पत्थर भी द्रवित हो जाता है — यह बिंब कोमलता और प्रेम का प्रतीक है।
3. शेफालिका के फूल झरना: 'छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल / बाँस था कि बबूल?' — बच्चे के स्पर्श से बाँस या बबूल जैसे कठोर पौधे भी शेफालिका (हरसिंगार) के फूल झरने लगते हैं — यह बिंब कठोरता से कोमलता में परिवर्तन दर्शाता है।
इन बिंबों के माध्यम से कवि ने बताया है कि बच्चे की मुसकान में अपार जीवनी-शक्ति और सौंदर्य है।

उत्तर: कवि ने जलजात (कमल), पिघलते पाषाण और झरते शेफालिका-फूल जैसे बिंबों से बच्चे की मुसकान की कोमलता और जीवनदायी शक्ति को व्यक्त किया है।

प्रश्न 4

भाव स्पष्ट कीजिए— (क) छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात। (ख) छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल बाँस था कि बबूल?

हल

(क) छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात।
जलजात अर्थात् कमल का फूल जो प्रायः तालाब में खिलता है।
यहाँ कवि कह रहा है कि बच्चे के धूल-धूसरित गात (अंग) देखकर ऐसा लगता है जैसे कमल का फूल तालाब छोड़कर झोंपड़ी में खिल उठा हो।
भाव यह है कि धूल-मिट्टी में सने शरीर पर खिलती दंतुरित मुसकान कमल के फूल जैसी पवित्र और सुंदर है — विपरीत परिस्थितियों में भी सौंदर्य का खिलना।

(ख) छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल / बाँस था कि बबूल?
शेफालिका (हरसिंगार) के फूल कोमल और सुगंधित होते हैं; बाँस और बबूल कठोर, काँटेदार पौधे हैं।
कवि कह रहा है — जब बच्चे ने मुझे छुआ तो जो व्यक्ति बाँस या बबूल जैसा कठोर था, वह भी शेफालिका के फूल

झरने की तरह कोमल हो गया।

भाव यह है कि बच्चे का स्पर्श अत्यंत कोमल और जादुई है — वह कठोर से कठोर हृदय को भी कोमल, प्रेमपूर्ण और संवेदनशील बना देता है।

उत्तर: (क) बच्चे के धूल-सने गात पर खिलती मुसकान मानो कमल (जलजात) तालाब छोड़ झोंपड़ी में खिल उठा हो — विपरीत परिस्थिति में सौंदर्य का प्रस्फुटन। (ख) बच्चे के स्पर्श से बाँस/बबूल जैसा कठोर हृदय भी शेफालिका के फूल झरने की तरह कोमल हो जाता है।

प्रश्नावली 4.2 — यह दंतुरित मुसकान — रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 5

मुसकान और क्रोध भिन्न-भिन्न भाव हैं। इनकी उपस्थिति से बने वातावरण की भिन्नता का चित्रण कीजिए।

हल

मुसकान का वातावरण:
जब कोई व्यक्ति मुस्कुराता है तो वातावरण में सौहार्द, प्रेम और कोमलता का भाव फैल जाता है।
मुसकान देखने वाले के हृदय में भी प्रसन्नता और उल्लास जाग उठता है।
यह वातावरण को आनंदमय, आत्मीय और उत्साहवर्धक बनाती है।
बच्चे की दंतुरित मुसकान जैसी निश्छल मुसकान तो मृतक में भी जान डाल देती है।

क्रोध का वातावरण:
जब कोई व्यक्ति क्रोधित होता है तो वातावरण में तनाव, भय और असहजता पसर जाती है।
आसपास के लोग संकुचित और असहज महसूस करते हैं; संवाद रुक जाता है।
क्रोध वातावरण को विषाक्त, कटु और भारी बना देता है।

निष्कर्ष: मुसकान से बने वातावरण में मेल-मिलाप और जीवनी-शक्ति होती है, जबकि क्रोध से बने वातावरण में दूरी और कटुता होती है।

उत्तर: मुसकान वातावरण को सौहार्दपूर्ण, आनंदमय और कोमल बनाती है जबकि क्रोध वातावरण में तनाव, भय और कटुता फैला देता है।

प्रश्न 6

दंतुरित मुसकान से बच्चे की उम्र का अनुमान लगाइए और तर्क सहित उत्तर दीजिए।

हल

'दंतुरित' शब्द का अर्थ है — नए-नए दाँत निकलना।
शिशु के दाँत सामान्यतः 6 से 12 महीने की उम्र में निकलने शुरू होते हैं।
जब बच्चे के नए-नए दाँत निकलते हैं और वह मुस्कुराता है तो वह 'दंतुरित मुसकान' होती है।
कविता में बच्चे को 'धूलि-धूसर गात' (धूल-मिट्टी से सने अंग) वाला बताया गया है — इससे लगता है बच्चा थोड़ा बड़ा होकर मिट्टी में खेलने लगा है।
कवि कहता है कि बच्चा उसे पहचानता नहीं ('तुम मुझे पाए नहीं पहचान?') — यह इस उम्र का स्वाभाविक लक्षण है जब बच्चे अपरिचितों को नहीं पहचानते।
अतः बच्चे की उम्र लगभग 6 माह से 1 वर्ष के बीच की प्रतीत होती है — जब दाँत निकल रहे हों, वह मुस्कुरा रहा हो पर बाहरी लोगों को न पहचानता हो।

उत्तर: दंतुरित मुसकान से बच्चे की उम्र लगभग 6 माह से 1 वर्ष के बीच प्रतीत होती है — जब नए-नए दाँत निकल रहे हों और बच्चा अपरिचितों को न पहचानता हो।

प्रश्न 7

बच्चे से कवि की मुलाकात का जो शब्द-चित्र उपस्थित हुआ है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

हल

कवि नागार्जुन दीर्घकाल के बाद घर लौटे हैं — वे 'चिर प्रवासी' हैं।
उनकी मित्र/परिचित की माँ (शिशु की माँ) माध्यम बनी है; उसने शिशु को कवि से मिलवाया।
कवि ने बच्चे को देखा — उसके अंग धूल-मिट्टी से सने थे (धूलि-धूसर गात)।
बच्चे ने कवि को नहीं पहचाना और अनिमेष (बिना पलक झपकाए) देखता रहा।
माँ अपनी उँगलियों से बच्चे को मधुपर्क (प्रेम का आतिथ्य-स्पर्श) करा रही थी।
बच्चा कनखियों (तिरछी नज़र) से देख रहा था।
जब उनकी आँखें चार हुईं तो बच्चे ने अपनी दंतुरित मुसकान दी जो कवि को बड़ी 'छविमान' (सुंदर) लगी।
यह मुलाकात एक बच्चे की मुग्धकारी मुसकान और एक प्रवासी कवि के आत्मीय प्रेम का सुंदर शब्द-चित्र है।

उत्तर: कवि चिर प्रवासी हैं जो लंबे अरसे बाद लौटे हैं; शिशु की माँ माध्यम बनी; बच्चे ने धूल-धूसर अंगों से, बिना पहचाने, कनखियों से देखा — और जब आँखें मिलीं तो उसकी दंतुरित मुसकान कवि के हृदय को छविमान लगी।

प्रश्नावली 4.3 — फसल — पाठ से

प्रश्न 1

कवि के अनुसार फसल क्या है?

हल

कवि नागार्जुन के अनुसार फसल केवल मिट्टी और बीज का परिणाम नहीं है — वह अनेक तत्वों के सम्मिलित योगदान का फल है।

कवि के शब्दों में: 'और तो कुछ नहीं है वह / नदियों के पानी का जादू है वह / हाथों के स्पर्श की महिमा है / भूरी-काली-संदली मिट्टी का गुण धर्म है / रूपांतर है सूरज की किरणों का / सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का!'

अर्थात् फसल है:

1. नदियों के पानी का जादू — अनेक नदियों का जल मिलकर फसल को सींचता है।
2. हाथों के स्पर्श की महिमा — लाखों-करोड़ों किसानों के परिश्रम का परिणाम।
3. भूरी-काली-संदली मिट्टी का गुण धर्म — अनेक खेतों की मिट्टी के गुण-धर्म का सम्मिश्रण।
4. सूरज की किरणों का रूपांतर — सूर्यप्रकाश की ऊर्जा का फसल के रूप में परिवर्तन।
5. हवा की थिरकन का सिमटा हुआ संकोच — वायु के पोषण का फसल में समाहित होना।

उत्तर: कवि के अनुसार फसल नदियों के जल, किसानों के हाथों का स्पर्श, अनेक खेतों की मिट्टी, सूरज की किरणों और हवा की थिरकन — इन सभी तत्वों के संयुक्त योगदान का जादुई परिणाम है।

प्रश्न 2

कविता में फसल उपजाने के लिए आवश्यक तत्वों की बात कही गई है। वे आवश्यक तत्व कौन-कौन से हैं?

हल

कविता 'फसल' में नागार्जुन ने फसल उपजाने के लिए निम्नलिखित आवश्यक तत्वों का उल्लेख किया है:

1. जल (नदियों का पानी): 'ढेर सारी नदियों के पानी का जादू' — केवल एक या दो नहीं, ढेर सारी नदियों का जल फसल के लिए आवश्यक है।
2. मानव-श्रम (हाथों का स्पर्श): 'लाख-लाख कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा' — लाखों-करोड़ों किसानों के परिश्रमी हाथों की मेहनत।
3. मिट्टी: 'हजार-हजार खेतों की मिट्टी का गुण धर्म' — अनेक खेतों की उपजाऊ भूरी, काली और संदली मिट्टी।
4. सूर्यप्रकाश: 'रूपांतर है सूरज की किरणों का' — सूर्य की किरणें फसल को ऊर्जा देती हैं।
5. वायु: 'सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का' — हवा का पोषणकारी योगदान।

उत्तर: फसल उपजाने के पाँच आवश्यक तत्व हैं — नदियों का जल, किसानों के हाथों का श्रम, अनेक खेतों की मिट्टी, सूर्य की किरणें और हवा।

प्रश्न 3

फसल को 'हाथों के स्पर्श की गरिमा' और 'महिमा' कहकर कवि क्या व्यक्त करना चाहता है?

हल

कविता में कवि ने फसल को 'हाथों के स्पर्श की गरिमा' और 'महिमा' कहा है।
इससे कवि यह व्यक्त करना चाहता है:

1. किसान के परिश्रम का सम्मान: फसल केवल प्रकृति की देन नहीं है — उसमें 'लाख-लाख कोटि-कोटि' किसानों के हाथों का परिश्रम और स्पर्श समाहित है।

2. श्रमिक की गरिमा: 'गरिमा' और 'महिमा' शब्दों का प्रयोग करके कवि किसानों और श्रमिकों के काम को उच्च सम्मान देता है — उनका श्रम गरिमापूर्ण और महिमामंडित है।

3. सहयोग की शक्ति: फसल एक व्यक्ति के हाथ से नहीं, करोड़ों हाथों के सामूहिक स्पर्श से बनती है — यह सामूहिक श्रम की महिमा है।

4. मानव-प्रकृति का सहयोग: फसल केवल प्राकृतिक शक्तियों (जल, मिट्टी, सूरज, हवा) का नहीं, बल्कि मानवीय श्रम और प्रकृति के संयुक्त सहयोग का परिणाम है।

उत्तर: कवि किसानों के परिश्रम को सम्मान देते हुए यह व्यक्त करना चाहता है कि फसल करोड़ों किसानों के श्रमशील हाथों की गरिमा और महिमा का ठोस रूप है — श्रम का यह महत्त्व उसे पवित्र और महान बनाता है।

प्रश्न 4

भाव स्पष्ट कीजिए— (क) रूपांतर है सूरज की किरणों का सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का!

हल

(क) रूपांतर है सूरज की किरणों का / सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का!

'रूपांतर है सूरज की किरणों का' — सूर्य की किरणें सीधे दिखती नहीं हैं; वे प्रकाश-संश्लेषण (photosynthesis) की प्रक्रिया से फसल में समाहित हो जाती हैं और फसल के रूप में रूपांतरित हो जाती हैं। फसल सूर्य-ऊर्जा का ठोस रूप है।

'सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का' — हवा (वायु) स्वयं अदृश्य और थिरकती हुई होती है; वह फसल की पत्तियों में, उसके दाने में सिमटकर समा जाती है। फसल में हवा का यह पोषण संकोचित (compressed) रूप में बंद हो जाता है।

दोनों पंक्तियों का संयुक्त भाव: फसल केवल दिखने वाली चीज़ नहीं है — उसमें सूर्य की ऊर्जा और हवा का पोषण अदृश्य रूप से समाहित हैं; वे रूपांतरित और संकोचित होकर फसल के हर अनाज के दाने में मौजूद हैं।

उत्तर: फसल सूर्य की किरणों का रूपांतरित रूप है (सौर-ऊर्जा का ठोस रूप) और हवा की थिरकन का सिमटा हुआ संकोच है — दोनों अदृश्य शक्तियाँ फसल में समाहित हो जाती हैं।

प्रश्नावली 4.4 — फसल — रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 5

कवि ने फसल को हजार-हजार खेतों की मिट्टी का गुण-धर्म कहा है— (क) मिट्टी के गुण-धर्म को आप किस तरह परिभाषित करेंगे? (ख) वर्तमान जीवन शैली मिट्टी के गुण-धर्म को किस-किस तरह प्रभावित करती है? (ग) मिट्टी द्वारा अपना गुण-धर्म छोड़ने की स्थिति में क्या किसी भी प्रकार के जीवन की कल्पना की जा सकती है? (घ) मिट्टी के गुण-धर्म को पोषित करने में हमारी क्या भूमिका हो सकती है?

हल

(क) मिट्टी के गुण-धर्म की परिभाषा:
मिट्टी का गुण-धर्म उसकी वह क्षमता है जिसके कारण वह जल, खनिज, वायु और सूर्यप्रकाश के साथ मिलकर बीज को अंकुरित करती है, पौधे को पोषण देती है और फसल उगाती है। मिट्टी में उर्वरता, नमी-धारण क्षमता, सूक्ष्म जीवाणु और खनिज तत्व होते हैं — यही उसका गुण-धर्म है।

(ख) वर्तमान जीवन शैली का प्रभाव:
रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता घट रही है।
औद्योगिक प्रदूषण और कचरे से मिट्टी विषाक्त हो रही है।
जंगलों की अंधाधुंध कटाई से मिट्टी का क्षरण (erosion) बढ़ रहा है।
अति-सिंचाई से मिट्टी में लवणता (salinity) बढ़ रही है।

(ग) मिट्टी का गुण-धर्म समाप्त होने पर जीवन की कल्पना:
यदि मिट्टी अपना गुण-धर्म खो दे तो कोई भी फसल नहीं उग सकती।
वनस्पति और पशु-पक्षी सभी जीवों का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा।
मनुष्य सहित समस्त जीवन की कल्पना असंभव हो जाएगी — जीवन का आधार ही मिट्टी है।

(घ) मिट्टी के गुण-धर्म को पोषित करने में हमारी भूमिका:
जैविक खेती अपनाएँ और रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग कम करें।
वृक्षारोपण करें ताकि मिट्टी का क्षरण रोका जा सके।
कचरे और प्रदूषण से मिट्टी को बचाएँ।
फसल चक्र (crop rotation) अपनाएँ जिससे मिट्टी की उर्वरता बनी रहे।

उत्तर: (क) मिट्टी का गुण-धर्म उसकी उर्वरता, नमी-धारण क्षमता और पोषक तत्वों से बीज को अंकुरित कर फसल देने की क्षमता है। (ख) रसायन, प्रदूषण और वन-कटाई इसे नुकसान पहुँचाते हैं। (ग) मिट्टी का गुण-धर्म समाप्त हो तो किसी भी जीवन की कल्पना असंभव है। (घ) जैविक खेती, वृक्षारोपण और प्रदूषण नियंत्रण से हम इसे पोषित कर सकते हैं।

प्रश्नावली 4.5 — शब्द-संपदा

प्रश्न 1

निम्नलिखित शब्दों के अर्थ मिलाइए— दंतुरित | धूलि-धूसर गात | जलजात | अनिमेष | इतर | मधुपर्क | कनखी | छविमान अर्थ: बच्चों के नए-नए दाँत | धूल मिट्टी से सने अंग-प्रत्यंग | कमल का फूल | बिना पलक झपकाए लगातार देखना | दूसरा | दही, घी, शहद, जल और दूध का योग जो देवता और अतिथि के सामने रखा जाता है | तिरछी निगाह से देखना | सुंदर

हल

दंतुरित — बच्चों के नए-नए दाँत
धूलि-धूसर गात — धूल मिट्टी से सने अंग-प्रत्यंग
जलजात — कमल का फूल
अनिमेष — बिना पलक झपकाए लगातार देखना
इतर — दूसरा
मधुपर्क — दही, घी, शहद, जल और दूध का योग जो देवता और अतिथि के सामने रखा जाता है (पंचामृत); कविता में माँ के प्रेम के रूप में प्रयुक्त
कनखी — तिरछी निगाह से देखना
छविमान — सुंदर

उत्तर: दंतुरित=नए-नए दाँत; धूलि-धूसर गात=धूल-सने अंग; जलजात=कमल; अनिमेष=बिना पलक झपकाए; इतर=दूसरा; मधुपर्क=पंचामृत/माँ का प्रेम; कनखी=तिरछी नज़र; छविमान=सुंदर।